बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नास से, जो अत्यन्त करुणामय और दयावान है।

विश्व-नेता

-मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी (रह०)

मुसलमान हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) (उन पर ईश्वर की दया और कृपा हो) को "सरवरे आलम" कहते हैं, सीधे-सादे शब्दों में इसका अर्थ है "दुनिया का सरदार", हिन्दी में इसका अर्थ "विश्व-नायक" होगा और अंग्रेज़ी में "लीडर आफ़ दि वर्ल्ड"। देखने में यह बहुत बड़ी उपाधि है किन्तु जिस महान व्यक्ति को यह उपाधि दी गई है उसकी कृति ही वास्तव में ऐसी है कि उसको सरवरे आलम या विश्व-नेता कहना अति उक्ति नहीं सर्वता सत्य है।

देखिए किसी व्यक्ति को विश्व-नेता कहने के लिए सबसे पहली शर्त यह होनी चाएि कि उसने किसी विशेष जाति, वंश या वर्ग की भलाई के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के मनुष्यों की भलाई के लिए काम किया हो। एक देश-प्रेमी या राष्ट्रवादी नेता का आप इस रूप से जितना चाहें आदर कर लें कि उसने अपने लोगों की बड़ी सेवा की किन्तु आप उसके देशवासी या सजाति नहीं हैं तो वह किसी हालत में आपका नेता नहीं हो सकता। जिस व्यक्ति का प्रेम, शुभ चिन्ता और कार्य सब कुछ चीन या स्पेन तक सीमित हो, मुझ हिन्दुस्तानी को उससे क्या सम्बन्ध कि मैं उसे अपना नेता मानूँ, बल्कि यदि वह अपनी जाति को दूसरों से श्रेष्ठ ठहराता हो और दूसरों को गिराकर अपनी जाति को उठाना चाहता हो तो मैं उससे घृणा करने पर बाध्य हूँ। समस्त जातियों के मनुष्य किसी एक व्यक्ति को अपना नेता केवल उसी दशा में मान सकते हैं जब कि उसकी दृष्टि में सब जातियाँ और सब मनुष्य समान हों, वह सबका समान शुभ चिन्तक हो और अपनी शुभ कामना में एक को दूसरे पर प्रधानता न दे।

दूसरी मुख्य शर्त जो विश्व-नेता होने के लिए आवश्यक है वह यह है कि उसने ऐसे सिद्धान्त पेश किए हों जो सारे संसार के मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करते हों और जिनमें मानव-जीवन की सारी समस्याओं का समाधान हो।

नेता का अर्थ है पथ-प्रदर्शक। नेता की आवश्यकता इसलिए है कि वह कल्याण और भलाई का रास्ता बताए, अतः संसार का नेता वही हो सकता है जो सारे संसार के मनुष्यों को ऐसा मार्ग बताए जिसमें सबका कल्याण हो।

तीसरी अनिवार्य शर्त विश्वनेता होने के लिए यह है कि उसका पथ-प्रदर्शन किसी विशेष काल के लिए न हो, बल्कि हर काल और हर स्थिति में समान रूप से लाभदायक और समान रूप से शुद्ध और समान रूप से अनुकरणीय हो। जिस नेता का पथ-प्रदर्शन एक काल में लाभकारी और दूसरे काल में निरर्थक हो उसको विश्वनेता नहीं कहा जा सकता। विश्व का नेता भी वही है कि जब तक संसार शेष है उसका पथ-प्रदर्शन भी लाभदायक रहे।

चौथी सबसे मुख्य शर्त यह है कि उसने केवल सिद्धान्त ही पेश करने पर बस न किया हो, बल्कि अपने पेश किए हुए सिद्धान्तों को जीवन में कार्यान्वित करके दिखा दिया हो, और उनके आधार पर एक जीता-जागता समाज उत्पन्न कर दिया हो। केवल सिद्धान्त पेश करनेवाला अधिक-से-अधिक एक विचारक हो सकता है, नेता नहीं हो सकता। नेता होने के लिए आवश्यक है कि आदमी अपने सिद्धान्तों को कार्यान्वित करके दिखा दे।

आइए अब हम देखें कि चारों शर्तें उस महान पुरुष में कहाँ तक पाई जाती हैं जिसको हम "सरवरे आलम" या "विश्व-नायक" या "विश्व-नेता" कहते हैं! पहली शर्त को पहले लीजिए। आप हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन का अध्ययन करें तो एक ही दृष्टि में अनुभव कर लेंगे कि यह किसी राष्ट्रवादी या देश-प्रेमी का जीवन नहीं है बल्कि एक मानव-प्रेमी और विश्वव्यापी दृष्टिकोण रखनेवाले मनुष्य का जीवन है। उनकी दृष्टि में सारे मनुष्य समान थे, किसी परिवार, किसी वर्ग, किसी जाति, किसी वंश, किसी देश के विशेष लाभ से उन्हें कोई सम्बन्ध न था। अमीर और ग़रीब, ऊँच और नीच, काले और गोरे अरब और ग़ैर-अरब, एशियाई और यूरोपीयन, शामी और आर्य सबको वे इस वास्तविक रूप में देखते थे मानो सब एक ही मानव-जाति के अंग हैं। उनके मुख से जीवन भर कोई एक शब्द या एक वाक्य भी ऐसा नहीं निकला और न जीवन भर में कोई काम उन्होंने ऐसा किया जिससे यह सन्देह किया जा सकता हो कि उन्हें एक मानव-वर्ग के विरुद्ध दूसरे मानव-वर्ग के लाभ से विशेष सम्बन्ध है। यही कारण है कि उनके जीवन ही में हबशी, ईरानी, रूमी, मिसरी और इसराईली उसी प्रकार उनके कामों में सहायक रहे जिस प्रकार अरब, और उनके बाद संसार के हर कोने में हर वंश और हर जाति के मनुष्यों ने उनको उसी प्रकार अपना नेता स्वीकार किया जिस प्रकार स्वयं उनकी जाति ने।

यह उसी शुद्ध मनुष्यता ही का चमात्कार तो है कि आज आप एक भारतवासी के मुख से उस महान पुरूष की प्रशंसा सुन रहे हैं जिसका सदियों पहले अरब में जन्म हुआ था।

अब दूसरी और तीसरी शर्त को एक साथ लीजिए। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने विशेष जातियों और विशेष देशों की सामयिक और स्थानीय समस्याओं से वार्त्ता करने में अपना समय नष्ट नहीं किया, बल्कि अपनी पूर्ण शक्ति संसार में मावनता की उस बड़ी गुत्थी के सुलझाने में व्यय कर दी जिससे सारे मनुष्यों की कुल छोटी-छोटी समस्याएँ स्वयं सुलझ जाती हैं। वह बड़ी समस्या क्या है ? वह केवल यह है कि सृष्टि का विधान जिस सिद्धान्त पर क़ायम है, मानव जीवन की व्यवस्था भी उसी के अनुसार हो। क्योंकि मनुष्य इस सृष्टि का एक अंश है और अंश की गति का सम्पूर्ण के विरुद्ध होना ही विनाश का कारण है। यदि आप इस बात को समझना चाहते हैं तो उसका आसान तरीक़ा यह है कि अपनी दृष्टि को तनिक प्रयत्न करके समय और स्थान बन्धनों से मुक्त कर लीजिए। भू-मण्डल पर इस प्रकार दृष्टि डालिए कि आदि से आज तक और भविष्य से अनन्त काल तक बसनेवाले सारे मनुष्य एक ही समय में आप के सामने हों, फिर देखिए कि मनुष्य के जीवन में बिगाड़ के जितने रूप उत्पन्न हुए हैं या होने सम्भव हैं उन सबकी जड़ क्या है और क्या हो सकती है ? इस प्रश्न पर आप जितना विचार करेंगे, चितनी छानबीन और अन्वेषण करेंगे, सारांश यही निकलेगा कि मनुष्य का ईश्वर से विद्रोह सारी बुराइयों की जड़ है ; इसलिए कि ईश्वर का विद्रोही होकर मनुष्य दो स्थितियों में से कोई एक ही स्थिति ग्रहण करता है। या तो वह अपने को स्वतन्त्र और अनुत्तरदाई समझकर मनमाने कार्य करने लगता है और यह चीज़ उसे अत्याचारी बना देती है या फिर वह ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों की आज्ञा के सामने सिर झुकाने लगता है और इससे संसार में उपद्रव के अगणित मार्ग उत्पन्न हो जाते हैं। अब यह सोचने की बात है कि ईश्वर से बेपरवाह होकर ये बुराइयाँ क्यों उत्पन्न होती हैं ? इसका सीधा और साफ़ उत्तर यह है कि ऐसा करना वास्तविकता के विरुद्ध है, इसलिए उसका परिणाम बुरा निकलता है। यह सारी सृष्टि वास्तव में ईश्वर का साम्राज्य है। पृथ्वी, चंद्र, वायु, जल, प्रकाश सब ईश्वर की मिलकियत हैं और मनुष्य इस साम्राज्य में पैदाइशी दास की हैसियत रखता है। यह पूरा साम्राज्य जिस व्यवस्था पर स्थापित है और जिस व्यवस्था पर चल रहा है यदि मनुष्य उसका एक भाग होते हुए भी उसके विरुद्ध रवैया ग्रहण करे तो निः सन्देह उसका ऐसा रवैया विनाशकारी परिणाम ही उत्पन्न करेगा। उसका यह समझना कि मेरे ऊपर कोई सर्वोच्च अधिकारी नहीं है जिसके सामने मैं उत्तरदाई हूँ वास्तविकता के विरुद्ध है; इसलिए जब वह स्वतन्त्र बनकर स्वेच्छाचारी रूप से काम करता है और अपने जीवन का नियम स्वयं आप बनाता है तो परिणाम बुरा निकलता है। इसी प्रकार उसका ईश्वर के अतिरिक्त किसी और को अधिकार और प्रभुत्व का मालिक मानना और उससे भय या लालच रखना और उसके प्रभुत्व के आगे झुक जाना भी वास्तविकता के विरुद्ध है। वास्तव में इस पूरी सृष्टि में ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी यह हैसियत नहीं रखता। अतः इसका परिणाम भी बुरा ही निकलता है। ठीक परिणाम निकलने की सूरत इसके अतिरिक्त कोई नहीं है कि पृथ्वी और आकाश में जो वास्तविक शासक है मनुष्य उसके आगे सिर झुकाए। अपनी सत्ता और स्वतन्त्रता को उसके हवाले कर दे और अपनी आज्ञापालन और बन्दगी को उसके लिए शुद्ध कर दे। अपने जीवन का विधान स्वयं बनाने या दूसरों से ग्रहण करने के स्थान पर उससे ग्रहण करना वह बुनियादी सुधार की योजना है जिसे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मानव-जीवन के लिए पेश की है। यह एशिया और यूरोप के बन्धन से मुक्त है। पृथ्वी के ऊपर जहाँ-जहाँ मनुष्य आबाद हैं, यही एक सुधार योजना उनके भ्रष्ट जीवन को शुद्ध कर सकती है, और यह योजना भूत और भविष्य के बन्धन से भी मुक्त है। डेढ़ हज़ार वर्ष पहले यह जितनी शुद्ध और लाभदायक थी उतनी ही आज भी है और उतनी ही दस हज़ार वर्ष बाद भी रहेगी।

अब अन्तिम शर्त बाक़ी रह जाती है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने केवल एक काल्पनिक योजना ही पेश नहीं की, बल्कि उस योजना पर एक जीवित समाज उत्पन्न करके दिखा दिया। उन्होंने २३ वर्ष के अल्पकाल में लाखों मनुष्यों को ईश्वर के शासन के आगे आज्ञाशीष झुकाने पर तैयार कर लिया, उनसे स्वच्छन्ता भी छुड़ाई और ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों की बन्दगी भी। फिर उनको एकत्रित करके शुद्ध ईश्वर आज्ञापालन पर एक नई आचार व्यवस्था, एक नई सांस्कृतिक व्यवस्था, एक नई सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था, बनाई और उसको व्यवहार में लाकर सारे संसार को दिखा दिया कि वह जो सिद्धान्त पेश कर रहे हैं उसके आधार पर कैसा जीवन बनाता है और दूसरे सिद्धान्तों के जीवन के सम्मुख वह कितना पवित्र और कितना शुद्ध है। यह वह कीर्ति है जिसके आधार पर हम हज़रत मुहम्मद (उन पर ईश्वर की दया और कृपा हो) को "सरवरे आलम" या "विश्व-नेता" कहते हैं। उनका यह कार्य किसी विशेष जाति के लिए न था, समस्त मानव-जाति के लिए था। यह मानवता की संयुक्त धरोहर है जिस पर किसी का अधिकार किसी से कम और अधिक नहीं है। जो चाहे इससे लाभ उठाए। मैं नहीं समझता कि इसके विरुद्ध किसी को द्वेष रखने का क्या कारण हो सकता है ?

विश्व-उद्धारक

थोड़ी देर के लिए वास्तविक आँखें बन्द करके कल्पना की आँखें खोल लीजिए, और एक हज़ार चार सौ वर्ष पीछे पलट कर संसार की स्थिति पर दृष्टि डालिए, यह कैसा संसार था ? मनुष्य-मनुष्य के बीच विचार के आदान-प्रदान के साधन कितने कम थे। देशों और जातियों के बीच सम्बन्ध के साधन कितने सीमित थे। मनुष्य की जानकारी कितनी कम थी। उसके विचार कितने संकुचित थे। उस पर भ्रांति और पशुत्व का कितना प्रभाव था। अज्ञानता के अंधकार में ज्ञान का प्रकाश कितना मद्धिम था, और इस अंधकार को धकेल-धकेल कर यह कितनी कठिनाइयों के साथ फैल रहा था। संसार में न तार था, न टेलीफोन था, न रेडियो था, न रेल न हवाई जहाज़, न प्रेस थे और न प्रकाशन-गृह थे। न स्कूलों और कालेजों की अधिकता थी, न पत्र और पत्रिकाएँ प्रकाशित होती थीं, न अधिकता से किताबें लिखी जाती थीं, न अधिकता से उनका प्रकाशन होता था, उस काल के एक विद्वान की जानकारी भी कुछ पहलुओं से आजकल के एक साधारण व्यक्ति की अपेक्षा कम थी। उस काल की ऊँची सोसाइटी का मनुष्य भी आधुनिक काल के एक मज़दूर की अपेक्षा कम सभ्य था। उस काल का एक उदार विचार मनुष्य भी आजकल के अनुदार मनुष्य से भी अधिक अनुदार था। जो बातें आज सर्वसाधारण को ज्ञात हैं वह उस काल में वर्षों के परिश्रण और खोज और छानबीन के पश्चात् भी कठिनता से ज्ञात हो सकती थीं। जो जानकारी आज प्रकाश की तरह वातावरण में फैली हुई हैं और बच्चे को होश संभालते ही प्राप्त हो जाती है, उसके लिए उस काल में सैकड़ों मील की यात्रा की जाती थी, और आयु उनकी खोज में बीच जाती थी। जिन बातों को आज भ्रांति मूलक समझा जाता है वे उस काल की सच्चाइयाँ थीं। जिन कार्यों को आज असभ्य और बर्बरतापूर्ण कहा जाता है वह उस काल के साधारण कार्य थे। जिन रीतियों से आज मनुष्य का हृदय घृणा करता है, वह उस काल के आचरण में न केवल उचित समझी जाती थीं बल्कि कोई व्यक्ति यह सोच भी न सकता था कि उनके विरुद्ध भी कोई प्रणाली हो सकती है। मनुष्य की आश्चर्य पूर्ण वस्तुओं की पूजा-भावना इतनी बढ़ी हुई थी कि वह किसी वस्तु में तब तक कोई सच्चाई, कोई महानता और कोई पवित्रता स्वीकार ही नहीं कर सकता था जब तक वह प्रकृति से ऊपर न हो, स्वभाव के विरुद्ध न हो, असाधारण न हो; यहाँ तक कि मनुष्य अपने आप को इतना हीन समझता था कि किसी मनुष्य का ईश्वर तक पहुँचा हुआ होना, और ईश्वर तक किसी पहुँचे हुए व्यक्ति का मनुष्य होना उसकी कल्पना की पहुँच से बहुत दूर था। उस अन्धकारमय युग में धरती का एक कोना ऐसा था जहाँ अन्धकार का प्रभुत्व और भी बढ़ा हुआ था। जो देश उस काल की सभ्यता की कसौटी के अनुसार सभ्य थे, उनके बीच अरब का देश सबसे अलग-थलग पड़ा हुआ था। उसके इर्द-गिर्द ईरान, मिस्र, और रूम देशों में विद्या, कला और सभ्यता और संस्कृति का कुछ प्रकाश पाया जाता था, किन्तु रेत के बड़े-बड़े समुद्रों ने अरब को उनसे अलग कर रखा था। अरब सौदागर ऊँटों पर महीनों की राह चलकर उन देशों में व्यापार के लिए जाते थे और केवल वस्तुओं का आदान-प्रदान करके लौट आते थे, विद्या और संस्कृति का प्रकाश उनके साथ न आता था।

उनके देश में न कोई पाठशाल थी और न पुस्तकालय। न लोगों में विद्या की चर्चा थी, न विद्या और कला से कोई अनुराग था। सारे देश में गिनती के कुछ व्यक्ति थे जिन्हें कुछ लिखना पढ़ना आता था, किन्तु वह भी इतना नहीं कि उस काल की विद्या, कला, और शिल्प के ज्ञाता होते। उनके पास एक उच्च कोटि की भाषा अवश्य थी जिसमें ऊँचे विचारों के व्यक्त करने की असाधरण शक्ति थी। उनमें उच्च कोटि की साहित्यि रुचि भी विद्यमान थी, किन्तु उनके साहित्य का जो अंशावशेष हम तक पहुँचा है उसको देखने से ज्ञात होता है कि उनका ज्ञान कितना सीमित था। सभ्यता और संस्कृति में उनका दर्जा कितना नीचा था, उन पर भ्रमयुक्त भावनाओं का कितना प्रभुत्व था ? उनके विचारों और स्वभावों में कितनी अज्ञानता और पाशविकता थी, उनकी नैतिक क्लपनाएँ कितनी भद्दी थीं।

वहाँ कोई सुव्यवस्थित राज न था। कोई विधान और नियम न था। हर गोत्र अपने स्थान पर स्वाधीन था, और केवल "जंगल के नियम" का पालन किया जाता था, जिसका जिस पर वश चलता उसे मार डालता, और उसके धन पर अधिकार जमा लेता। यह बात एक अरब जंगली की समझ से उच्चतर थी कि जो व्यक्ति उसके गोत्र का नहीं उसे वह क्यों न मार डाले और उसके धन पर क्यों न अधिकार कर बैठे ?

आचरण, नैतिकता और संस्कृति व सभ्यता की जो कुछ भी क्लपनाएँ उन लोगों में थीं वे अत्यन्त तुच्छ और सर्वथा भद्दी थीं। पवित्र और अपवित्र, उचित और अनुचित, शिष्ट और अशिष्ट की पहचान से वे लगभग अनभिज्ञ थे। उनका जीवन अतिघृणित था। उनका आचरण बर्बरतापूर्ण था। व्यभिचाए, जुआ, शराब, चोरी, डाका, हत्या और हिंसा उनके जीवन के साधारण कार्य थे। वे एक-दूसरे के सामने निःसंकोच नंगे हो जाते थे। उनकी स्त्रियाँ तक नंगी होकर काबा की परिक्रमा करती थीं। वे अपनी लड़कियों को अपने हाथ से जीवित धरती में गाड़ देते थे, केवल इस मूर्खतापूर्ण

धारणा पर कि कोई उनका दामाद न बने। वे अपने बापों के मरने के बाद अपनी सौतेली माताओं से विवाह कर लेते थे। उन्हें भोजन, वस्त्र और सफ़ाई के साधारण नियमों की भी जानकारी न थी।

धर्म के विषय में वे उन सारी मूर्खताओं और कुमार्गों के भागी थे, जिनमें उस काल का संसार लिप्त था। मूर्तिपूजा, प्रेतपूजा, नक्षत्रपूजा, ग़र्ज़ एक ईश्वर की पूजा के सिवा उस समय संसार में जितनी पूजाएँ पाई जाती थीं, वे सब उनमें प्रचलित थीं। प्राचीन पैग़म्बरों और उनकी शिक्षाओं के बारे में कोई वास्तविक ज्ञान उनके पास न था। वे इतना अवश्य जानते थे कि इब्राहीम और इस्माईल उनके पितामह हैं, मगर यह न जानते थे कि उन दोनों बाप-बेटे का धर्म क्या था ? और वे किसकी पूजा करते थे। आद और समूद की कथाएँ भी उनमें प्रसिद्ध थीं, मगर उनकी जो कथाएँ अरब के इतिहासकारों ने लिखी हैं उनको पढ़ जाइए, कहीं आपको सालेह और हूद की शिक्षाओं का चिह्न न मिलेगा। अरबों को यहूदियों और ईसाइयों द्वारा बनी-इसराईल के पैग़म्बरों की कथाएँ भी पहुँची थीं, मगर वे कहानियाँ जैसी कुछ थीं, उनका अनुमान करने के लिए एक दृष्टि उन कथाओं पर डाल लेना पर्याप्त है जो मुसलमान भाष्यकारों ने उद्धृत की हैं। आपको पता चल जाएगा कि अरब और स्वयं बनी-इसराईल जिन पैग़म्बरी को जानते थे वे कैसे मनुष्य थे। और पैग़म्बरी के सम्बन्ध में अरब और इसराईल वंश के लोग कितनी तुच्छ धारणाएँ रखते थे।

ऐसे काल और ऐसे देश में एक व्यक्ति जन्म लेता है। बचपन ही में माता-पिता और दादा का साया उसके सिर से उठ जाता है। इसलिए इस गई-गुज़री अवस्था में एक अरबी बच्चे को जो थोड़ी बहुत गुण शिक्षा मिल सकती थी वह भी उसे नहीं मिली। होश संभालता है तो जंगली लड़कों के सात बकरियाँ चराने लगता है। जवान होता है तो सौदागरी में लग जाता है। उठना, बैठना, मिलना-जुलना, सब कुछ उन्हीं अरबों के साथ है जिसका हाल आपने ऊपर देख लिया। शिक्षा का नाम तक नहीं। पढ़ना-लिखना तक नहीं आता। किसी विद्वान की संगति उसे प्राप्त नहीं हुई क्योंकि विद्वानों का अस्तिव उस समय सारे अरब में कहीं नहीं था। उसे अरब से बाहर क़दम निकालने के कुछ अवसर अवश्य प्राप्त हुए, मगर यह यात्रा केवल शाम के प्रदेश तक थी और वैसी ही व्यापारिक यात्रा थी जैसी उस काल में अरब के व्यापारिक क़ाफ़िले किया करते थे। मान लीजिए कि अगर उन यात्राओं के बीच में उसे ज्ञान और संस्कृति के कुछ चिह्नों का निरीक्षण किया और उसे कुछ विद्वानों से मिलने का अवसर भी मिला, तो स्पष्ट है कि ऐसे यत्र-तत्र निरक्षण और ऐसी सामयिक मुलाक़ातों से किसी मनुष्य का चरित्र नहीं बन जाता। उनका प्रभाव व्यक्ति पर इतना प्रबल नहीं हो सकता कि वह अपने इर्द-गिर्द से सर्वथा मुक्त, सर्वथा विरुद्ध और इतना उच्च हो जाए कि उसमें और उसके वातावरण में कुछ समानता ही न रहे। उनसे ऐसा ज्ञान प्राप्त होना सम्भव नहीं जो एक अनपढ़ व्यक्ति को एक देश का नहीं समस्त संसार और एक युग का नहीं बल्कि समस्त युगों का नेता बना दे। अगर किसी अंश में उसने बाहर के लोगों से ज्ञान प्राप्त भी किया हो तो जो ज्ञान उस समय तक संसार को प्राप्त ही न थे, धर्म, नैतिकता, सभ्यता और नागरिकता की जो कल्पनाएँ और जो सिद्धान्त उस समय संसार में कहीं थे ही नहीं, मानव-चरित्र के जो आदर्श कहीं पाए ही न जाते थे उनकी प्राप्ति का कोई साधन ही नहीं हो सकता था।

केवल अरब ही की नहीं समस्त संसार की हालत दृष्टि के सामने रखिए, और देखिए कि यह व्यक्ति जिन लोगों में पैदा हुआ, जिनमें बचपन गुज़ारा, जिनके साथ पलकर जवान हुआ, जिनसे उसका मेल-जोल रहा, जिनसे उसके व्यवहार सम्बन्ध रहे, आरम्भ ही से स्वभाव में, आचरण में वह उन सबसे भिन्न दिखाई देता है। वह कभी झूठ नहीं बोलता। उसकी सत्यवादिता पर जाति गवाही देती है। उसके किसी बुरे से बुरे शत्रु ने भी कभी उसपर यह दोष नहीं लगाया कि उसने अमुक अवसर पर झुठ बोला था। वह किसी से दुर्वाच्य नहीं करता। किसी ने उसके मुख से कभी गाली या कोई गन्दी बात नहीं सुनी। वह लोगों से हर प्रकार के व्यवहार करता है, मगर कभी किसी से कड़वी बात और तू-तू, मैं-मैं का अवसर नहीं आता। उसकी बोली में कटुता की जगह मिठास है और वह भी ऐसी कि जो उससे मिलता है उसका हो जाता है। वह किसी से दुर्व्यवहार नहीं करता। किसी का हक़ नहीं मारता। वर्षो सौदागरी का पेशा करने पर भी किसी का एक पैसा भी अनुचित ढंग से नहीं लेता। जिन लोगों से उसके सम्बन्ध होते हैं वे सब उसकी सत्यता पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। समस्त जाति उसको "अमीन" (धरोहर, रक्षक एवं सत्यवादी) कहती है। शत्रु तक उसके पास अपने क़ीमती माल रखवाते हैं और वह उनकी भी रक्षा करता है। मिर्लज्ज लोगों के बीच वह ऐसा लजीला है कि होश संभालने के बाद किसी ने उसको नंगा नहीं देखा। दुराचारियों में वह ऐसा सदाचारी है कि कभी किसी कुकर्म में लिप्त नहीं होता। शराब और जुआ को हाथ तक नहीं लगाता, असभ्य लोगों के बीच वह ऐसा सभ्य है कि हर बेहूदगी और गंदगी से घृणा करता है और उसके हर काम में पवित्रता और सुधराई पाई जाती है। पाषाण-हृदयों के बीच वह ऐसा सुहृदय है कि हर एक के दुख-दर्द में सम्मिलित होता है। अनाथ बच्चों और विधवाओं की सहायता करता है। यात्रियों की सेवा करता है। किसी

को उससे दुख नहीं पहुँचता। वह दूसरों के लिए स्वयं दुख उठाता है। बर्बरों के बीच वह ऐसा शान्ति प्रिय है कि अपनी जाति में विद्रोह और रक्तपात का बाज़ार गर्म देखकर उसको दुख होता है और अपने क़बीले की लड़ाइयों से दामन बचाता है और सन्धि के प्रयत्नों में आगे-आगे रहता है। मूर्ति-पूजकों के बीच उसकी प्रकृति इतनी सीधी और उसकी बुद्धि इतनी शुद्ध है कि धरती और आकाश में कोई चीज़ उसे पूजने योग्य दिखाई नहीं देती। किसी प्राणी के आगे उसका सिर नहीं झुकता। मूर्तियों के चढ़ावे का भोजन भी ग्रहण नहीं करता। उसका हृदय आप ही शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और सृष्टि पूजा से घृणा करता है।

उस वातारण में वह व्यक्ति ऐसा प्रमुख दिखाई देता है कि जैसे घटाटोप अंधेरे में एक दीपक प्रकाशमान हो या पत्थरों के ढेर में एक हीरा चमक रहा हो। लगभग चालीस वर्ष तक ऐसा ही पवित्र, स्वच्छ और शिष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करने के बाद उसके जीवन में एक परिवर्तन उत्पन्न होता है और वह इस अंधकार से घबरा उठता है जो उसे हर ओर से घिरा हुआ दिखाई दे रहा था। वह मूर्खता, अनैतिकता, दुश्चरित्रता, दुर्व्यवस्था, अनेक पूजन और मूर्ति-पूजा के उस भयानक समुद्र से पार निकल जाना चाहता है जो उसको धेरे हुए है। उस क्षेत्र में कोई वस्तु भी उसको अपनी प्रकृति के अनुकूल दिखाई नहीं देती। वह सबसे अलग होकर आबादी से दूर पहाड़ों की संगति में जाकर बैठने लगता है। एकांत और शान्ति के वातावरण में कई-कई दिन गुज़ारता है। रोज़े रख-रख कर अपनी आत्मा और अपने हृदय और मस्तिकष्क को और अधिक शुद्ध करता है, सोचता है, विचार करता है, और कोई ऐसा प्रकाश ढूँढ़ता है जिससे वह चारों ओर छाई हुई अंधियारी को दूर कर दे। ऐसी शक्ति प्राप्त करना चाहता है जिससे वह बिगड़े हुए संसार को तोड़-फोड़ कर फिर से संवार दे।

यकायक स्थिति में एक महान परिवर्तन होता है। सहसा उसके हृदय में वह प्रकाश आ जाता है जो पहले उसमें न था। अचानक उसके भीतर वह शक्ति भर जाती है जिससे वह उस समय तक ख़ाली था। वह गुफ़ा की शून्यता से निकल आता है। अपनी जाति के पास जाता है, उससे कहता है ये मूर्तियाँ जिनके आगे तुम झुकते हो सब तथ्यहीन वस्तुएँ हैं, इन्हें छोड़ दो। कोई मनुष्य, कोई वृक्ष, कोई पत्थर, कोई मृत-आत्मा, कोई नक्षत्र ईस योग्य नहीं कि तुम उसके आगे सिर झुकाओ, उसकी पूजा और उसकी उपासना करो, उसकी आज्ञापालन और हुक्मबरदारी करो। यह पृथ्वी, यह चाँद, यह सूर्य, यह नक्षत्र, इस धरती और आकाश की सारी वस्तुएँ एक ईश्वर की सृष्टि हैं। वही तुम्हारा और इन सबका पैदा करनेवाला है। वही जीविका देनेवाला है। वही मारने और जिलानेवाला है। सब कुछ छोड़कर उसी की पूजा करो। सबको छोड़कर उसकी की आज्ञा मानो, और उसी के आगे सिर झुकाओ। यह चोरी, यह लूटमार, यह हिंसा और रक्तपात, यह अन्याय और अत्याचार, यह कुकर्म जो तुम करते हो सब पाप हैं, इन्हें छोड़ दो। ईश्वर इन्हें पसन्द नहीं करता। सच बोलो, न्याय करो। किसी की जान न लो, किसी का माल न छीनो, जो कुछ लो हक़ के साथ लो, जो कुछ दो, हक़ के साथ दो। तुम सब मनुष्य हो। मनुष्य-मनुष्य सब बराबर हैं। न कोई नीचता का कलंक लेकर पैदा हुआ और न कोई बड़ाई का तमग़ा लेकर संसार में आया। श्रेष्ठता और लड़ाई वंश और गोत्र में नहीं ईश्वर की आज्ञा पर चलने, अच्छे काम करने और पवित्र जीवन बिताने में है। जो ईश्वर से डरता है, पुण्य आत्मा और पवित्र है; वही उत्तम श्रेणी का मनुष्य है। जो ऐसा नहीं वह कुछ भी नहीं। मरने के बाद तुम सबको अपने ईश्वर के पास उपस्थित होना है। तुम में से हर एक व्यक्ति अपने कर्मों का ईश्वर के सामने उत्तरदायी है। वह ईश्वर जो सब कुछ देखता और जानता है। तुम कोई चीज़ उससे छिपा नहीं सकते। तुम्हारे जीवन का कर्मपत्र उसके सम्मुख बिना किसी कमी और अधिकता के पेश होगा, और उसी कर्मपत्र के अनुसार वह तुम्हारे परिणाम का निर्णय करेगा। उस सच्चे न्यायी के यहाँ न कोई सिफ़ारिश काम आएगी, न रिश्वत चलेगी, न किसी का वंश पूछा जाएगा। वहाँ केवल ईमान और अच्छे कर्म की पूछ होगी। जिसके पास यह दौलत होगी वह स्वर्ग में जाएगा और जिसके पास इनमें से कुछ भी न होगा वह असफल नरक में डाला जाएगा। यह था वह सन्देश जिसे लेकर वह गुफ़ा से निकला।

मूर्ख जाति उसकी शत्रु हो जाती है। गालियाँ देती है। पत्थर मारती है। एक दो दिन नहीं इकट्ठे तेरह वर्ष तक उस पर बड़े-से-बड़ा अत्याचार करती है। यहाँ तक कि उसे देश से निकाल देती है और फिर निकालने पर भी दम नहीं लेती। वह जहाँ जाकर शरण लेता है, वहाँ भी उसे बुरी तरह सताती है। सारे अरब को उसके विरुद्ध उभार देती है और पूरे आठ वर्ष तक उसके विरुद्ध संग्राम-संलग्न रहती है। वह इन सब कष्टों को सहता है, मगर अपनी बात से नहीं टलता। यह जाति उसकी शत्रु क्यों हुई ? क्या धन और धरती का कोई झगड़ा था ? क्या ख़ून का कोई दावा था। क्या वह उनसे कोई चीज़ माँग रहा था ? नहीं, सारी शत्रुता इस बात पर थी कि वह एक ईश्वर की उपासना और पवित्रता और पुन्य कर्म की शिक्षा क्यों देता है ? मूर्तिपूजा, अनेकेश्वरवाद और कुकर्म के विरुद्ध प्रचार क्यों करता है ? पुजारियों और

पुरोहितों की अगुवाई पर चोट क्यों लगाता है ? सरदारों की सरदारी का पाखण्ड क्यों तोड़ता है ? आदमी-आदमी के बीच से ऊँच-नीच का भेद-भाव क्यों मिटाना चाहता है ? गोत्र और वंश के द्वेष को मूर्खता क्यों ठहाराता है ? चिरकाल से समाज की जो व्यवस्था बंधी जली आ रही है उसे क्यों तोड़ना चाहता है ? जाति कहती थी कि ये बातें जो तू कह रहा है यह सब गोत्र-गाथा और जातीय संस्कार के विरुद्ध हैं, तू उनको छोड़ दे। नहीं तो हम तेरा जीना मुश्किल कर देंगे।

अच्छा तो इस व्यक्ति ने यह कष्ट उठाए ? जाति बादशाही देने के लिए तैयार थी। धन के ढेर उसके चरणों में डालने के लिए तैयार थी इस शर्त पर कि वह इस शिक्षा को बन्द कर दे, मगर उसने उन सबको ठुकरा दिया, और अपनी शिक्षा के लिए पत्थर खाना और अत्याचार सहना स्वीकार किया। यह आख़िर क्यों ? क्या लोगों के ईश्वरवादी और सदाचारी बन जाने में उसका कोई अपना लाभ था ? क्या कोई ऐसा लाभ था जिसके मुक़ाबले में राज और सरदारी, दौरत और ऐश के सारे लालच भी कोई महत्व न रखते थे ? क्या कोई एसा लाभ था जिसकी ख़ातिर एक आदमी कठिन से कठिन शारीरिक और आत्मिक कष्टों में पड़ा रहना और इक्कीस वर्ष तक पड़ा रहना भी सहन कर सकता हो ? विचार करो, क्या सहृदयता, त्याग और मानव-जाति की सहानुभूति का इससे भी ऊँचा कोई दर्जा तुम्हारी कल्पना में आ सकता है कि कोई व्यक्ति अपने लाभ के लिए नहीं दूसरों की भलाई के लिए कष्ट उठाए ? जिनकी भलाई और कल्याण के लिए वह प्रयत्न करता है वे ही उसको पत्थर मारें, गालियाँ दें, घर से बेघर कर दें और देश में भी उसका पीछा न छोड़ें और इन सब बातों पर बी वह उनका भला चाहने से बाज़ न आए ?

फिर देखिए क्या कोई झूठा व्यक्ति किसी तथ्यहीन बात के लिए ऐसे कष्ट सहन कर सकता है ? क्या कोई तीर-तुक्के लड़ानेवाला आदमी केवल भ्रम और अनुमान से कोई बात कह कर उस पर इतना जम सकता है कि विपत्तियों के पहाड़ उसपर टूट जाएँ, धरती उसपर तंग कर दी जाए, सारा देश उसके विरुद्ध उठ खड़ा हो, बड़ी-बड़ी फ़ौजे उसपर उमड़-उमड़ कर आएँ, मगर वह अपनी बात से बाल की नोक के बराबर भी हटने पर आमादा न हो। यह धैर्य, यह संकल्प, यह सन्तोष स्वयं गवाही दे रहा है कि उसको अपनी सच्चाई पर विश्वास और पूर्ण विश्वास था। यदि उसके हृदय में लेश मात्र भी शक और सन्देह होता तो वह लगातार २१ वर्ष तक विपत्तियों और कष्टों के अनवरत तूफ़ानों के सम्मुख कभी न ठहर सकता था।

यह तो उस व्यक्ति की दशा-परिवर्तन का एक पहलू था। दूसरा पहलू इससे भी अधिक आश्चर्यजनक है। चालीस वर्ष की आयु तक वह एक अरबी था। साधारण अरबों की भाँति इस बीच में किसी ने उस सौदागर को एक भाषणकर्त्ता, और एक ऐसे व्याख्यानदाता के रूप में न जाना जिसके व्याख्यान में मानों जादू हो। किसी ने उसे हिकमत और ज्ञान की बातें करते न सुना। किसी ने उसको वेदान्त और नैतिक दर्शन और विधान और राजनीति, अर्थ और संस्कृति सम्बन्धी समस्याओँ पर वार्ता करते न देखा। किसी ने उससे ख़ुदा और फ़रिश्तों और आसमानी किताबों और पिछले रसूलों और प्राचीन जातियों, प्रलय और मृत्यु के बाद जीने और स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध में एक शब्द भी न सुना। वह पवित्र आचरण सभ्य शिष्ट व्यवहार और उत्तम चरित्र तो अवश्य रखता था, मगर चालीस वर्ष की आयु को पहुँचने तक उसमें कोई असाधारण बात न पाई गई, जिससे लोगों को आशा होती कि अब यह व्यक्ति कुछ बननेवाला है। उस समय तक जाननेवाले उसको केवल एक मौन, शान्ति प्रिय और अति सज्जन पुरुष की हैसियत से जानते थे। मगर ४० वर्ष के बाद वह अपनी गुफ़ा से एक नया सन्देश लेकर निकला तो एकदम उसकी काया ही पलटी हुई थी।

अब वह एक आश्चर्यजनक वाणी सुना रहा था, जिसको सुनकर सारा अरब आश्चर्य चकित रह गया। उसकी वाणी के प्रभाव की तीव्रता की यह दशा थी कि उसके कट्टर दुश्मन भी उसको सुनते हुए डरते थे कि कहीं यह दिल में उतर न जाए, उसकी वाणी की सरसता, उत्तमता और वर्णन की शक्ति का यह हाल था कि सारी अरब-जाति को जिसमें बड़े-बड़े कवि व्याख्यानदाता और वाक्पटुता के दावेदार मौजूद थे, उसने चुनौती दी कि तुम सब मिलकर एक ही "सूरह" (क़ुरआन का एक अंश) इसके अनुरूप बना लाओ, मगर कोई इसके मुक़ाबले का साहस न कर सका। ऐसी अनुपम वाणी कभी अरब के कानों ने सुनी न थी।

अब सहसा वह एक अपूर्व ज्ञानी, सभ्यता और संस्कृति का एक अद्वितीय सुधारक, राजनीति का एक आश्चर्यजनक पटु, एक महान नीतिकार, एक उत्तम श्रेणी का जज, एक वीर सेनापति बनकर प्रकट हुआ। रेगिस्तान के रहनेवाले उस अनपढ़ व्यक्ति ने हिकमत, ज्ञान और बुद्धि की वे बातें कहनी प्रारम्भ कर दीं जो इससे पहले किसी ने न कही थीं और न उसके बाद कोई कह सका। वह विद्याहीन मनुष्य ईश्वरवाद के महान प्रसंगों पर निश्चयात्मक बयान देने लगा। जातियों के इतिहास से जातियों के उत्थान-पतन के दर्शन पर व्याख्यान देने लगा। पुराने सुधारकों के कार्यों पर आलोचना और संसार के धर्मों पर टीका और बातियों के भेदभाव के निर्णय करने लगा। नैतिकता, सभ्यता और शिष्टता

का पाठ पढ़ाने लगा।

उसने सामाजिक, अर्थिक और सामूहिक व्यवहारों और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विष्य में नियम बनाने आरम्भ कर दिए और ऐसे-ऐसे नियम बनाए कि बड़े-बड़े विद्वान और ज्ञानी, सोच-विचार और जीवन भर के अनुभवों के बाद कठिनता से उनके रहस्यों को समझ सके, और संसार के अनुभव जितने बढ़ते जाते हैं उनके गुण और अधिक व्यापक होते जाते हैं। वह मौनधारी, शान्तिप्रिय या पारी जिसने समस्त जीवन में कभी तलवार नहीं चलाई थी, कभी कोई सैनिक शिक्षा नहीं पाई थी, यहाँ तक कि जो जीवन भर में एक बार एक लड़ाई में केवल तमाशाई की हैसियत से शामिल हुआ था, वह देखते-देखते ऐसा वीर योद्धा बन गया, जिसके पाँव कठिन-से-कठिन युद्धों में भी अपने स्थान से एक इंच न हटे। ऐसा महान सेनापति बन गया जिसने नौ वर्ष की अवधि में समस्त अरब देश को अपने अधीन कर लिया। ऐसा आश्चर्यजनक मिलेट्री लीडर बन गया कि उसके उत्पन्न किए हुए फ़ौजी संगठन और सैनिक व्यवस्था के प्रभाव के सरोसामान अरबों ने गिने चुने वर्षो में संसार की दो महान सैनिक शक्तियों का उलट कर रख दिया। यह दो महान सैनिक शक्तियाँ रोम और ईरान की थीं।

वह अलग-थलग रहनेवाला एकांतप्रिय मनुष्य जिसमें किसी ने चालीस वर्ष तक राजनीतिक रुचि की गन्ध भी न पाई थी यकायक इतना महान सुधारक और विधिकार बनकर प्रकट हुआ कि २३ वर्ष के भीतर उसने १२ लाख वर्ग क्षेत्र में फैली हुई मरुभूमि के असंगठित, लड़ाकू, मूर्ख, स्वच्छन्द, असभ्य, और आपस में सदा लड़नेवाले गोत्रों को रेल, तार, रेडियों, और प्रेस की सहायता के बिना एक धर्म, एक सभ्यता, एक विधान और एक राज-व्यवस्था के अधीन बना दिया। उसने उनके विचार बदल दिए, उनके स्वभाव बदल दिए, उनके आचरण बदल दिए, उनकी असभ्यता को उच्चकोटि की सभ्यता में, उनकी बर्बरता को श्रेष्ठ नागरिकता में, उनकी कुचरित्रता और अनैतिकता को सुचरित्रता, संयम और श्रेष्ठ नैतिकता में, उनकी उद्दंडता और निरंकुशता को असीम नियमबद्धता, और आज्ञापालन में परिवर्तित कर दिया। उस बाँझ जाति को जिसकी गोद में शताब्दियों से कोई एक भी वर्णनीय मनुष्य उत्पन्न न हुआ था, उसने ऐसा सफल बना दिया कि उसमें सहस्रों-सहस्र मानव महान उठ खड़े हुए और संसार को धर्म और नैतिकता और सभ्यता का पाठ पढ़ाने के लिए संसार में चारों ओर फैल गए। और यह काम उसने अत्याचार, बल-प्रयोग और दग़ाफ़रेब से सम्पन्न नहीं किया, बल्कि दिल मोह लेनेवाले स्वभाव और आत्माओं को विजय कर लेनेवाली सज्जनता और मस्तिष्कों पर प्रभुत्व जमा लेनेवाली शिक्षा से सम्पन्न किया। उसने अपने अच्छे व्यवहार से शत्रुओं को मित्र बनाया, दया प्रेम से दिलों को मोम किया, समता और न्या से हुकूमत की। हक़ और सच्चाई से कभी बाल बराबर न हटा। युद्ध में भी कभी किसी से प्रतिज्ञा-भंग और विश्वासघात नहीं किया। अपने दुष्ट शत्रुओं पर भी अत्याचार नहीं किया। जो उसके ख़ून के प्यासे थे, जिन्होंने उसको पत्थर मारे थे, उसको देश से निकाला था, उसके विरुद्ध सारे अरब को खड़ा कर दिया था, यहाँ तक कि जिन्होंने दुश्मनी के जोश में उसके चचा का कलेजा तक निकाल कर चबा था, उनको भी उसने विजय-प्राप्ति के बाद क्षमा कर दिया। अपने लिए कभी उसने किसी से बदला नहीं लिया।

इन सब बातों के साथ; वह अपनी मनोआकांक्षा पर इतना क़ाबू रखता था, बल्कि वह इतना इच्छारहित था कि जब वह देश भर का बादशाह हो गया, उस समय भी वह जैसा योगी पहले था वैसा ही योगी रहा। फूस के छप्पर में रहता था, चटाई पर सोता था, मोटा-झोटा पहनता था, निर्धनों का-सा भोजन करता था, उपवास तक कर जाता था, रात-रात भर अपने ईश्वर की बन्दगी में खड़ा रहता था, ग़रीबों और मुसीबत के मारों की सेवा करता था, एक मज़दूर की तरह काम करने में भी उसको हिचक न थी। अन्तिम समय तक उसके भीतर बादशाही के घमण्ड और अमीरी की शान और बड़े आदमियों के से दम्भ की तनिक-सी गन्ध भी उत्पन्न न हुई। वह एक साधारण आदमी की भाँति लोगों से मिलता था, उनके दुख-दर्द में शामिल होता था, जनता के बीच इस प्रकार बैठता था कि अपरिचित आदमी को यह जानना कठिन होता था कि इस सभा में जाति का नेता, देश का बादशाह कौन है। इतना बड़ा आदमी होने पर भी छोटे-से-छोटे आदमी के साथ ऐसा व्यवहार करता था मानों वह उसी जैसा एक आदमी है। सारी आयु की चोष्टा और प्रयत्न में उसने अपने लिए कुछ भी न छोड़ा। अपना पूरा हिस्सा अपनी जाति को प्रदान कर दिया। अपने अनुयायियों पर उसने अपने या अपने वंश के कुछ भी स्वत्व स्थापित न किए, यहाँ तक कि अपने वंशज को "ज़कात" (एक विशेष इस्लामी दान) लेने के अधिकार से भी वंचित कर दिया। केवल इस डर से कि कहीं आगे चलकर उसके अनुयायी उसके वंशजनों ही को सारी ज़कात न देने लग जाएँ।

अभी इस महान मनुष्य की महानता की सूची समाप्त नहीं हुई, उसकी महानता का ठीक-ठीक अनुमान करने

के लिए आपको संसार के इतिहास पर सामूहिक रूप से एक दृष्टि डालनी चाहिए। आप देखेंगे कि अरब की मरुभूमि का यह अनपढ़ व्यक्ति जो चौदह सौ वर्ष पहले उस अंधकारपूर्ण काल में उत्पन्न हुआ, वास्तव में नवीन काल का निर्माता और सर्व संसार का नेता है। वह ने केवल उनका नेता है जो उसे नेता मानते हैं, बल्कि उनका भी है जो उसे नहीं मानते। उनको इस बात का बोध तक नहीं कि जिसके विरुद्ध वह मुख खोलते हैं उसका पथ प्रदर्शन किस प्रकार उनके विचारों में, उनके जीवन के सिद्धान्तों में, उनके कर्म के नियमों में और उनके आधुनिक काल की आत्मा में मिश्रित हो गया है।

यही व्यक्ति है जिसने संसार की कल्पनाओं की धारा को भ्रमवाद और अदभुतवाद और योगवाद की ओर से हटाकर बुद्धिवाद और यथार्थवाद और संयमयुक्त धर्मवाद की ओर फेर दिया। उसने अनुभव युक्त चमत्कार माँगनेवाली दुनिया में बौद्धिक चमत्कारों को समझने और उन्हीं को सच्चाई की कसौटी मानने की रुचि पैदा की, उसने प्रकृति-विरुद्ध कामों में ख़ुदा की ख़ुदाई के चिह्न ढूँढ़नेवालों की आँखें खोली और उनमें प्रकृति के दृश्यों (Natural Phenomena) में ख़ुदा की निशानियाँ देखने का स्वभाव उत्पन्न किया। उसी ने ख़याली घोड़े दौड़ाने वालों को अटकल बाज़ी (Specu-lation) से हटाकर बुद्धि, विचार, निरीक्षण और अन्वेषण के रास्ते पर लगाया। उसी ने बुद्धि, अनुभव, और चेतना की सीमाएँ मनुष्य को बताईं। भौतिकवाद और ब्रह्मवाद में समन्वय स्थापित किया। धर्म से ज्ञान और कर्म का, और ज्ञान और कर्म का धर्म से सम्बन्ध स्थापित किया। धर्म की शक्ति से संसार में वैज्ञानिक शक्ति और वैज्ञानिक शक्ति से शुद्ध धर्मवाद पैदा किया। उसी ने अनेकेश्वरवाद और सृष्टिपूजा की नींव को उखाड़ा, और ज्ञान की शक्ति से एकेश्वरवाद का विश्वास ऐसी दृढ़ता के साथ स्थापित किया कि अनेकेश्वरवादियों और मूर्तिपूजकों के मत भी एकेश्वरवाद का रंग ग्रहण करने पर विवश हो गए। उसने नैतिकता और अध्यात्मिकता की बुनियादी कल्पनाओं को बदला। जो लोग वैराग्य और इच्छा-दमन को नैतिकता समझते थे, जिनके निकट मन और शरीर के स्वत्वों को पूरा करने और सांसारिक जीवन के विषयों में भाग लेने के साथ आध्यात्मिक उन्नति और मुक्ति सम्भव ही न थी, उनको उसी ने नागरिकता और समाज और सांसारिक कर्म के बीच नैतिकता की महानता और आध्यात्मिक उन्नति और मुक्ति की प्राप्ति का रास्ता दिखाया। फिर वही है जिसने मनुष्य को उसके सच्चे मूल्य का ज्ञान कराया। जो लोग भगवान, अवतार और अल्लाह के बेटे के सिवा किसी को पथ-प्रदर्शक और नेता स्वीकार करने पर तैयार न थे उनको उसने बताया कि मनुष्य और तुम्हारे ही जैसा मनुष्य स्वर्ग के राज का प्रतिनिधि और ईश्वर का उत्तराधिकारी हो सकता है। जो लोग शक्तिशाली मनुष्य को अपना ईश्वर बताते थे उनको उसी ने समझाया कि मनुष्य सिवाए मनुष्य के और कुछ नहीं है। न कोई व्यक्ति पवित्रता, शासनकर्त्ता और आज्ञादाता का जन्मसिद्ध अधिकार लेकर आया है और न किसी के माथे पर अपवित्रता और महकूमी और दासता का पैदाइशी कलंक लगा हुआ है। इसी शिक्षा ने संसार में मानव-एकता, समान्ता, जनसत्ता, और स्वाधीनता के विचार उत्पन्न किए हैं।

कल्पनाओं की सीमा से आगे बढ़िए। आपको इस अशिक्षित की लीडरशिप के व्यावहारिक फल संसार के नियमों और प्रणालियों और व्यवहारों में इस अधिकता से नज़र आएँगे कि उनकी गिनती कठिन हो जाएगी। नैतिकता, सभ्यता, शिष्टता और स्वच्छता के कितने ही सिद्धान्त हैं जो उसकी शिक्षा से निकलकर सारे संसार में फैल गए। उसने जो समाजिक नियम बनाए थे उनसे संसार ने कितने लाभ प्राप्त किए और अब तक किए जा रहा है। अर्थनीति के सम्बन्ध में उसने जो सिद्धान्त सिखाए उनसे संसार में कितने आन्दोलन उत्पन्न हुए और होते जा रहे हैं। शासन की जो प्रणालियाँ उसने ग्रहन की थीं उनसे संसार के राजनीतिक दृष्टिकोण में कितनी क्रान्तियाँ हुई और हो रही हैं। न्याय और नियम के जिन सिद्धान्तों को उसने जन्म दिया, उन्होंने दुनिया की अदालती व्यवस्थाओं और क़ानूनी विचारों को कितना प्रभावित किया और अब तक उसका प्रभाव-क्रम ख़ामोशी के साथ जारी है। युद्ध और सन्धि और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की सभ्यता जिस व्यक्ति ने व्यवहारिक रूप से संसार में स्थापित की वह वास्तव में यही अरब देश का महान पुरूष है, नहीं तो पहले संसार इससे अनभिज्ञ था कि युद्ध की भी कोई सभ्यता हो सकती है और विभिन्न राष्ट्रों में सम्मिलित मानवता के आधार पर भी व्यवहार होना सम्भव है।

मानव-इतिहास के इस पृष्ठ में इस विस्मयकारी मनुष्य का उच्च और महान व्यक्तित्व इतना उभरा हुआ दिखाई देता है कि आदि से लेकर अब तक के बड़े-बड़े ऐतिहासिक मनुष्य जिनकी संसार महान (Heroes) में गिनती करता है, जब उसके सामने लाए जाते हैं तो बौने दिखाई देते हैं। संसार के महानों में से कोई भी एसा नहीं जिसकी महानता की चमक-दमक मानव-जीवन के एक-दो विभागों से आगे बढ़ सकी हो। कोई सिद्धान्तों का बादशाह है मगर कर्म-शक्ति नहीं रखता, कोई कर्म का पुतला है लेकिन सोच-विचार में कमज़ोर है, किसी के चमत्कार राजनीतिक विधि तक सीमित हैं, कोई सैनिक विषयों का विशेषज्ञ है। किसी की दृष्टि सामाजिक जीवन के एक पहलू पर इतनी ज़्यादा

गहरी जमी है कि उससे दूसरे पहलू ओझल हो गए हैं। किसी ने नैतिकता और आध्यात्मिकता को लिया तो आर्थिक और राजनीतिक विषय को भुला दिया। किसी ने अर्थ और राजनीति को लिया तो नैतिकता और आध्यात्मिकता की उपेक्षा कर दी। सारांश यह है कि इतिहास में हर ओर एक रुखे हीरो ही दिखाई देते हैं, मगर अकेला एक ही व्यक्ति ऐसा है जिसमें सारी विभूतियाँ एकत्रित हैं। वह स्वयं दार्शनिक और ज्ञाता भी है और स्वयं दर्शन को व्यवहारिक जीवन में प्रचारित करनेवाला भी। वह राजनीतिक विधिकार भी है, और सेना नायक भी। नियमनिर्माता भी है, आचरण शिक्षक भी है, धार्मिक और आध्यात्मिक नेता भी है। उसकी दृष्टि मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन पर प्रसरित होती है और छोटे-से-छोटे भाग तक जाती है। खाने और पीने के नियम और शरीर की सफ़ाई के तरीक़ों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों तक एक-एक वस्तु के सम्बन्ध में वह आज्ञाएँ और आदेश देता है। अपने ध्येय के अनुसार एक स्थाई सभ्यता (Civilization) की रचना करके रख देता है, और जीवन के सारे विभिन्न पहलुओं में ऐसा वास्तविक समन्वय (Equillibrium) स्थापित करता है कि अधिकता और न्यूनता का कहीं चिह्न तक दिखाई नहीं देता। क्या कोई दूसरा व्यक्ति इस सम्पूर्णता का आपकी दृष्टि में है ?

दुनिया के बड़े-से-बड़े व्यक्तियों में से कोई एक भी ऐसा नहीं जो कम या ज़्यादा वातावरण और माहौल का पैदा किया हुआ न हो, मगर इस व्यक्ति की महानता सबसे निराली है। इसके बनाने में इसके वातावरण का कोई भाग दिखाई नहीं देता, और न किसी तर्क से यह प्रमाणित किया जा सकता है कि अरब का वातावरण उस समय ऐतिहासिक रूप से ऐसे मनुष्य की उत्पति की माँग करता था। बहुत कुछ खींच-तान कर आप जो कुछ कह सकते हैं वह इससे ज़्यादा कुछ न होगा कि ऐतिहासिक कारण अरब में एक ऐसे लीडर की उत्पति की माँग कर रहे थे जो गोत्रिकविभेद और विभिन्नता को हटाकर एक राष्ट्र बनाता और मुल्कों को अधिकृत करके अरबों के आर्थिक कल्याण का सामान करता। अर्थात् एक राष्ट्रवादी नेता जो उस काल की समस्त अरबी विशेषताओं से परिपूर्ण होता। अत्याचार, निर्दयता, रक्तपात, धोखा, फ़ेरब और सम्भव युक्ति से य्पनी जाति को समृद्ध बनाता और एक साम्राज्य पैदा करके अपने सम्बन्धियों के लिए छोड़ जाता। इसके सिवा उस समय के अरबी इतिहास की कोई माँग आप प्रमाणित नहीं कर सकते। हीगल के ऐतिहासिक दर्शन या मार्कस के भौतिक ऐतिहासिक विवेचना के दृष्टिकोण से आप अधिक-से-अधिक यही निश्चय कर सकते हैं कि उस समय उस वातावरण में एक राष्ट्र और एक समाज बनानेवाला पैदा होना चाहिए था या पैदा हो सकता था, मगर हीगली या मार्कसी दर्शन इस घटना का स्पष्टीकरण कैसे करेगा कि उस समय उस वातावरण में ऐसा व्यक्ति पैदा हुआ जो उत्तम आचरण सिखानेवाला, मानवता को संवारने और आत्माओं की शुद्धि करनेवाला और अज्ञानता के भ्रमों और द्वेषों को मिटानेवाला था। जिसकी दृष्टि क़ौम और नस्ल और मुल्क की सीमाओं को तोड़कर पूरी मानवता पर फैल गई। जिसने अपनी क़ौम के लिए नहीं बल्कि मानव-संसार के लिए एक नैतिक और आध्यात्मिक और सांस्कृतिक और राजनीतिक विधान की बुनियाद डाली। जिसने आर्थिक व्यवहारों, नागरिक राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को कल्पना लोक ही में नहीं बल्कि वास्तविक संसार में नैतिक आधारों पर स्थापित करके दिखाया और अध्यात्मिकता और भौतिकता का एसा नपा-तुला समावेश किया जो आज भी ज्ञान और बुद्धि की वैसी ही राजकीर्ति है जैसी उस समय थी। क्या ऐसे व्यक्ति को अशिक्षित अरब के वातावरण की पैदावार कह सकते हैं ?

यही नहीं कि वह व्यक्ति अपने वातावरण की पैदावार नज़र नहीं आता, बल्कि जब हम उसकी कीर्तियों पर विचार करते हैं तो मालूम होता है कि वह काल और स्थान के बन्धन से मुक्त है। उसकी दृष्टि समय और स्थिति की सीमाओं को तोड़ती हुई शताब्दियों और सहस्रों (Milleniums) के परदों को चीरती हुई आगे बढ़ती है। वह मनुष्य को हर काल और हर वातावरण में देखता है और उसके जीवन के लिए ऐसे नैतिक और व्यावहारिक आदेस देता है जो हर अवस्था में एक ही प्रकार की समता के साथ ठीक बैठते हैं। वह उन लोगों में से नहीं है जिनको इतिहास ने पुराना कर दिया है। जिनकी प्रशंसा हम केवल इस दृष्टि से कर सकते हैं कि वे अपने समय के अच्छे नेता थे। सबसे अलग और सबसे प्रमुख वह मानवता का ऐसा पथ-प्रदर्शक है जो इतिहास के साथ प्रगति (March) करता है और हर युग में वैसा ही नवीन (Modern) दिखाई देता है जैसा उससे पहले के समय के लिए था।

आप जिन लोगों को बड़ी उदारता के साथ इतिहास बनानेवाले (Makers of History) की उपाधि देते हैं, वह वास्तव में इतिहास के बनाए हुए (Creatures of History) है, सच पूछिए तो इतिहास बनानेवाला पूरे मानव-इतिहास में केवल यही एक महान पुरूष है। संसार के जितने लीडरों ने इतिहास में क्रान्तियाँ उत्पन्न की हैं उनकी अवस्थाओं पर विवेचनात्मक दृष्टि डालिए। आप देखेंगे कि हर ऐसी अवस्था में पहले से क्रान्तियाँ उत्पन्न हो रहे थे, और वह कारण स्वयं ही उस क्रान्ति दिशा और मार्ग भी निश्चित कर रहे थे जिसके उत्पन्न होने की वह माँग कर रहे थे।

क्रान्तिकारी नेता ने केवल इतना किया कि परिस्थितियों की माँग को शक्ति से कर्म में लाने के लिए उस अभिनेता का पार्ट अदा कर दिया जिसके लिए स्टेज और कर्म दोनों पहले ही से निश्चित हों, मगर इतिहास बनानेवालों या क्रान्ति उत्पन्न करनेवालों के पूरे समूह में यह अकेला ऐसा व्यक्ति हैं जहाँ क्रान्ति के कारण प्रस्तुत न थे, वहाँ उसने स्वयं कारण की सृष्टि की। जहाँ क्रान्ति की सामग्री उपस्थित न थी, वहाँ उसने स्वयं सामग्री उपस्थित की। जहाँ उस क्रान्ति की स्प्रिट और व्यवहारिक योग्यता लोगों में नहीं पाई जाती थी, वहाँ उसने स्वयं अपने मतलब के आदमी पैदा किए। अपने प्रबल व्यक्तित्व को पिघला कर हज़ारों मनुष्यों की काया में उतार दिया। और उनको वैसा बना दिया जैसा वह बनाना चाहता था। उसकी प्रबलता और इच्छाशक्ति ने आप ही क्रान्ति का सामान किया। आप ही उसका आकार-प्रकार निश्चित किया, और आप ही अपनी इच्छा के बल से स्थिति की गति को मोड़ कर उस रास्ते पर चलाया, जिस पर वह उसे चलाना चाहता था। इस कोटि का इतिहास-सृष्टिकर्त्ता और ऐसा महान क्रान्तिकारी आप को कहाँ नज़र आता है ?

आइए, अब इस प्रश्न पर विचार कीजिए कि १४ सौ वर्ष पहले के उस अंधेरे संसार में अरब जैसे प्रकाशरहित देश के एक कोने में एक बकरियाँ चरानेवाले और सौदागरी करनेवाले अनपढ़, मरुभूमिवासी के भीतर इतना ज्ञान, इतना प्रकाश, इतना बल, इतना चमत्कार, इतनी महान दीक्षा प्राप्त शक्तियाँ उत्पन्न हो जाने का कौन-सा आधार था ? आप कहते हैं कि यह सब उसके अपने दिलोदिमाग की पैदावार थी। मैं कहता हूँ कि अगर यह दावा उसी के दिलोदिमाग़ की पैदावार थी तो उसको ख़ुदाई का दावा करना चाहिए था और अगर वह ऐसा दावा करता तो वह दुनिया जिसने कृष्ण को भगवान सिद्ध करने में हिचक न की, जिसने बुद्ध को आप ही आप पूज्य बना लिया, जिसने मसीह को अपनी प्रसन्नता से ख़ुदा का बेटा मान लिया, जिसने आग और पानी और हवा तक को पूज डाला, वह ऐसे महान कीर्तिमान को ईश्वर बना लेने से कभी इनकार न करती। मगर देखिए वह स्वयं क्या कह रहा है ? वह अपनी कीर्तियों में से एक का क्रेडिट भी स्वयं नहीं लेता, कहता है कि मैं एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा मनुष्य, मेरे पास कुछ भी अपना नहीं, सब कुछ ईश्वर का है, और ईश्वर ही की ओर से है। यह "कलाम" (वाणी) जिसकी उपमा प्रस्तुत करने से सारी मानव-जाति विवश है, मेरा कलाम नहीं है। मेरे मस्तिष्क की योग्यता का परिणाम नहीं है शब्द शब्द ख़ुदा की ओर से मेरे पास आया है और इसकी प्रशंसा ख़ुदा ही के लिए है। यह कीर्तियाँ जो मैंने दिखाई, यह नियम जिनकी मैंने रचना की, यह सिद्धान्त जो मैने तुम्हें सिखाए इनमें कोई चीज़ भी मैंने स्वयं नहीं गढ़ी है। मैं कुछ भी अपनी योग्यता से प्रस्तुत करने पर प्रभुत्व नहीं रखता। हर-हर चीज़ में ख़ुदा के आदेश का मुहताज हूँ। उसकी ओर से जो संकेत होता है वही करता हूँ और वही कहता हूँ। देखो, यह कैसी विस्मयजनक सच्चाई है। कैसी ईमानदारी और सत्य वादिया है। झूठा मनुष्य तो बड़ा बनने के लिए दूसरों की ऐसी कीर्तियों का क्रेडिट भी ले लेने में संकोच नहीं करता, जिनके वास्तविक स्रोत का पता सरलता से चल जाता है, लेकिन यह व्यक्ति इन कीर्तियों का अपने साथ सम्बन्ध प्रकट नहीं करता, जिनको अगर वह अपनी कीर्तियाँ कहता तो कोई उसको झुठला न सकता था, क्योंकि किसी के पास उनके वास्तविक स्रोत तक पहुँचने का कोई साधन ही नहीं था। सच्चाई की इससे अधिक खुली हुई दलील और क्या हो सकती है ? उस व्यक्ति से अधिक सच्चा कौन होगा, जिसको एक अत्यन्त छिपे हुए आधार से ऐसे अनुपम चमत्कार प्राप्त हों और वह बेहिचक अपने वास्तविक स्रोत का पता दे दे। बताइए क्या कारण है कि हम उसकी सत्यता को स्वीकार न करें ?